इक बगल में चाँद होगा (हिन्दी स्वरलिपि और ताल)

मुखड़ा

रूपक हर सात मात्रे पर दोहरा रहा है

1	2	3	4	5	6	7
१	२	३	४	५	६	७
|१	२	३	|१	२	|१	२
इ	क	ब	ग	ल	में	s
स	स	स	ग	ग	प	-
|१	२	३	|१	२	|१	२
चाँ	s	द	हो	s	गा	s
ध	ध	ध	ध	प	प	ध
|१	२	३	|१	२	|१	२
इ	क	ब	ग	ल	में	s
न	न	न	ध	ध	प	प
|१	२	३	|१	२	|१	२
रो	s	टि	याँ	s	ह	म
प	-	प	प	-	सं	सं
|१	२	३	|१	२	|१	२
चाँ	s	द	पे	s	ह	म
सं	न	सं	सं	गं	रं	सं
|१	२	३	|१	२	|१	२
चाँ	s	द	पे	s	रो	s
सं	न	न	न	-	न	ध
|१	२	३	|१	२	|१	२
टी	s	की	चा	s	द	र
प	ध	प	प	-	प	प
|१	२	३	|१	२	|१	२
डा	s	ल	के	s	सो	s
प	ध	प	ग	र	र	ग
|१	२	३	|१	२	|१	२
जा	s	एँ	गे	s	औ	र
ग	-	र	स	-	स	र

प्रतीक माहेश्वरी

१	२	३	१	२	१	२
नीं	s	द	से	s	क	ह
स	न	न	र	-	र	र

१	२	३	१	२	१	२
दें	s	गे	लो	s	री	s
र	-	र	म	-	म	-

१	२	३	१	२	१	२
क	ल	सु	ना	s	ने	s
म	म	म	म	-	प	ग

१	२	३	१	२	१	२
आ	s	एँ	गे	s	औ	र
ग	-	ग	ग	-	स	र

१	२	३	१	२	१	२
नीं	s	द	से	s	क	ह
न	न	न	र	-	र	र

१	२	३	१	२	१	२
दें	s	गे	लो	s	री	s
र	-	र	र	-	र	-

१	२	३	१	२	१	२
क	ल	सु	ना	s	ने	s
र	र	र	र	-	र	स

१	२	३	१	२	१	२
आ	s	एँ	गे	s		
स	-	स	स	-		

प्रतीक माहेश्वरी

अन्तरा

1	2	3	4	5	6	7
१	२	३	४	५	६	७
|१	२	३	|१	२	|१	२
अ	ब	न	ते	s	री	s
सं	सं	सं	न	प	प	-
|१	२	३	|१	२	|१	२
सि	स	कि	यों	s	पे	s
सं	सं	सं	न	प	प	-
|१	२	३	|१	२	|१	२
को	s	ई	रो	s	ने	s
सं	सं	सं	सं	-	रं	-
|१	२	३	|१	२	|१	२
आ	s	ए	गा	s	s	s
सं	-	सं	सं	-	-	-
|१	२	३	|१	२	|१	२
को	s	ई	रो	s	ने	s
न	सं	न	ध	-	ध	-
|१	२	३	|१	२	|१	२
आ	s	ए	गा	s	s	s
ध	न	ध	प	-	-	-
|१	२	३	|१	२	|१	२
या	s	द	र	ख	प	र
स	-	स	र	र	ग	ग
|१	२	३	|१	२	|१	२
को	s	ई	अ	न	हो	s
स	-	स	र	र	ग	-
|१	२	३	|१	२	|१	२
नी	s	न	हीं	s	तू	s
ग	-	ग	ग	र	र	स
|१	२	३	|१	२	|१	२
ला	s	ए	गी	s	s	s
स	-	स	स	-	-	-

प्रतीक माहेश्वरी

१	२	३	१	२	१	२
आ	s	ए	गी	s	तो	s
स	-	स	र	-	ग	-

१	२	३	१	२	१	२
फि	र	क	हा	s	नी	s
स	-	स	र	र	ग	-

१	२	३	१	२	१	२
औ	s	र	कू	छ	हो	s
ग	-	ग	ग	र	र	स

१	२	३	१	२	१	२
जा	s	ए	गी	s	s	s
स	-	स	स	-	-	-

इक बगल में चाँद होगा की सरगम और पूर्ण बोल के लिए **यहाँ** जाएँ

किसी भी सुझाव या अन्य किसी गीत के स्वरों/ताल के लिए कृपया https://pratikmaheshwari.in पर जा कर संपर्क करें या विडियो के नीचे अपनी टिप्पणी छोड़ें।

इन पंक्तियों को एक ही प्रकार से गाया जाएगा:

> इक बगल में चाँद होगा, इक बगल में रोटियाँ
> इक बगल में नींद होगी, इक बगल में लोरियाँ
१ > इक बगल में खनखनाती सीपियाँ हो जाएँगी
> इक बगल में कुछ रुलाती सिसकियाँ हो जाएँगी
> होनी और अनहोनी की परवाह किसे है मेरी जाँ
> हद से ज़्यादा ये ही होगा की यहीं मर जायेंगे

> हम चाँद पे रोटी की चादर डालकर सो जायेंगे
२ > हम सीपियों में भर के सारे तारे छू के आयेंगे
> हम मौत को सपना बता कर उठ खड़े होंगे यहीं

> और नींद से कह देंगे लोरी कल सुनाने आयेंगे
३ > और सिसकियों को गुदगुदी कर कर के यूँ बहलाएँगे
> और होनी को ठेंगा दिखाकर खिलखिलाते जायेंगे

प्रतीक माहेश्वरी